3 कर्मवीर

कर्म के प्रति निष्ठा ही व्यक्ति की सफलता का निर्धारण करती है। बाधाएँ व्यक्तित्व को निखारने का काम करती हैं। कविता बाधाओं से जूझते हुए उन कर्मशील लोगों की बात करती है, जो सभ्यता-संस्कृति का निर्माण करते हैं।

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले ।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते-कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही।।
मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत् में आप ही।।
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ।।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।।
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।।
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किए।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए ।।

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।।
जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें, पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।।

काम को आरम्भ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते।।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन ।।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।।
गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे ।।
भेद नभ-तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया।।

कार्य-स्थल को वे कभी नहीं पूछते 'वह है कहाँ'।
कर दिखाते हैं असंभव को भी संभव वे वहाँ।।
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ।
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ।
डाल देते हैं विरोधी सैकड़ों ही अड़चनें।
वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टलें।।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले-फले।
बुद्धि, विद्या, धन, विभव के हैं जहाँ डेरे डले।।
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।।
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की औ' जाति की होगी भलाई भी तभी।।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्दार्थ

बाधा	–	रूकावट, डर, भय
विविध	–	विभिन्न, अनेक प्रकार के
बहु	–	बहुत, ज़्यादा
भाग	–	भाग्य
आन	–	गौरव की भावना, प्रतिज्ञा, संकल्प की भावना
यत्न	–	प्रयास
उज्ज्वल	–	चमकीला
बेड़ा	–	जलयान
विभव	–	ऐश्वर्य, दौलत
सपूत	–	अच्छा बेटा

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. कर्मवीर की पहचान क्या है?
2. अपने देश की उन्नति के लिए आप क्या-क्या कीजिएगा?
3. आप अपने को कर्मवीर कैसे साबित कर सकते हैं ?

पाठ से आगे

1. परिश्रमी के द्वारा मनोवांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। कैसे ?
2. ''कल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलय होइगा, बहुरि करेगा कब।'' इस पंक्ति का अर्थ लिखिए।
3. आप किसे अपना आदर्श मानते हैं और क्यों?

व्याकरण

1. दिए गए शब्दों से विपरीतार्थक शब्द-युग्म बनाइए, जैसे: अमीर-ग़रीब,
   दुख, कठिन, भलाई, सुख, जन्म, सरल, बुराई, सपूत, मरण, विरोधी, कपूत, समर्थक, असंभव, नभ, फूल, आरंभ, बुरा, वीर, संभव, तल, शूल, अंत, भला, कायर
2. सामान्य वाक्य - रेगिस्तान में जल ढूँढ़ना बहुत कठिन है।
   मुहावरेदार वाक्य - रेगिस्तान में जल ढूँढ़ना लोहे के चने चबाने की तरह है।

उक्त उदाहरण की तरह निम्नलिखित सामान्य वाक्यों को भी मुहावरेदार वाक्यों में बदलिए

(क) रमेश अपनी माँ का प्यारा लड़का है।
(ख) पुलिस को देखते ही चोर भाग गए।